

What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe. It propagates the universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 41

12/2019-20

MONTHLY

December 2019

Republic Day of India Celebrations

**Sunday 26th January 2020
Arya Samaj Bhavan
11am to 1.30pm**

Car Parking on Sunday Congregation – Car owners can safely park their cars on Rookery Road where there is SINGLE YELLOW LINE.

321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR.

Tel - 0121 359 7727

Website - www.arya-samaj.org

E-mail – enquiries@arya-samaj.org

Charity registration number 1156785

facebook <https://www.facebook.com/aryasamajwestmidlands/>

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
O Lord! We meditate you in our Heart -	
By Mr Krishan Chopra	4
वेदों में विज्ञान-६- आचार्य डॉ. उमेश यादव	6
Celebration Of Diwali at Arya Samaj	10
Children's Corner – The Cunning Mediator	13
Matrimonial Service information	17
News (पारिवारिक समाचार)	18
Appeal for donation	21
Fee for services provided by Arya Samaj West Midlands	23

For General and Matrimonial Enquiries

Please Ring

Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)

Monday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,

Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.

Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rig Ved, Yajur Ved, Sam Ved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights**

O Lord!
We meditate you in our Hearts

By Mr Krishan Chopra

परित्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि । धृषद्वर्णं दिवे दिवे हन्तारं
भंगुरावताम् ॥ ऋग्वेद-१०.८७.२२

**Pari tvagne puram vayam vipram sahasya dhimahi I
dhrisadvarnam dive dive hantaram bhangu ravatam II**

Rg Veda 10.87.22

Meaning in Text Order

Tva = you

agne = glorious Lord

puram = leds us to perfection

vyam = we

vipram = sage

sahasya = who encourages

pari - dhimahi = we meditate you

dhrsadvarnam = vigorously destroy

dive dive = day to day

bhangu – ravatam = destructive element .

Meaning

O venturesome Lord! O magnificent Lord! You lead us to the perfection. You are sage; you are possessor of fearful form, the destroyer of treacherous beings day to day. We meditate you with full reliance.

Contemplation

In this world, the human in the maze of comforts and distress, in joy and sorrow finds himself helpless without a guide and wishes to have the refuge of someone. But the helper is of no use to him who himself is bewildered. Therefore we meditate that helper who is embodiment of light and who bestow on us luster.

O embodiment of knowledge! You stimulate us; you encourage us to march on forward without caring the obstacles. You remind us about our inner hidden strength and infuse enthusiasm in us. You are perfect and always lead us to perfection. We are ignorant, and don't know where lies the perfection and which path will lead us to that destination? You are pillar of light for us and show us the right path, and you look after us. You are our well – wisher, of all you know every nook and corner of the universe. And have the knowledge of all the activities. When we meditate on the quality of your omnipresence, it saves us automatically from many evil activities and sins. Those people or worldly affairs which make us fearful, you destroy them vigorously. This your action keeps on going day to day.

O Lord! You are destroyer of destructive elements. You destroy vicious, violent and those who diminish our enthusiasm and those who torture us, you destroy them with full force. O most powerful Lord! We meditate you in our hearts. You become our guide and become our leader and lead us..

वेदों में विज्ञान-६

आचार्य डॉ. उमेश यादव

प्रदूषण-निवारक प्राकृतिक तत्त्व- वेदों में पर्यावरण की शुद्धि में अनेक प्राकृतिक तत्त्व उल्लेखित हैं जिनमें प्रमुखतः अग्नि, सूर्य, वेद-ध्वनि, पर्वत तथा वृक्ष-वनस्पति युक्त जंगल । आज हम इनके बारे में थोड़ा चिन्तन करेंगे जिनका आधार वेद-प्रमाण हैं ।

अग्नि- अग्नि का गुण दाहकता है । अपनी दाहकता से वातावरण में व्याप्त अशुद्धि, प्रदूषण वा घातक किटाणुओं को भी अग्नि नष्ट कर देती है । चाहे यज्ञ की अग्नि हो, घरेलू अग्नि हो, वन की अग्नि हो या समुद्र की हो, वह प्रदूषण कारी तत्त्वों को सर्वत्र नष्ट करती है । इस अग्नि में अच्छी सुगन्ध आदि सामग्री डालते हैं तो यह अग्नि उन्हें जलाकर सर्वत्र सुगन्धि फैलाकर वातावरण वा पर्यावरण को भी सुगन्धित कर देती है तथा व्याप्त प्रदूषण को नष्ट कर आरोग्यवर्धक वातावरण बना देती है । इसी तरह अगर अग्नि में दूषित तत्त्व डालें तो प्रदूषण बढ़ जाती है । जैसे अग्नि में मिर्च दाल दें फिर देखें, क्या होता है । पटाखे छोड़ने पर भी इसी तरह प्रदूषण बढ़ते हैं । अतः गोघृत, उपयुक्त समिधा(हवन-लकड़ी) व अनेक समसामयिक ऋतुओं के अनुसार बनायी गयी वनस्पति व औषधियुक्त सामग्री से अग्निहोत्र किया जाता है तो उससे प्रदूषण निश्चित ही दूर होता है । आजतक इसमें अनेकानेक वैज्ञानिक परीक्षण हो चुके हैं और यत्र-तत्र हो भी रहे हैं ।

वेदों में अग्नि को दोषनाशक के रूप में अनेक स्थानों पर बताया गया है । वेदों में प्रदूषणकारी तत्त्व को कहीं वृत्र, कहीं रक्षस, अत्रिन् तो कहीं असुर आदि भी कहा

गया है। इन सब प्रयुक्त शब्दों का अर्थ प्रकरण के अनुसार समझने पर स्पष्ट हो जाता है।

१. अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यासद् विश्वं न्यत्रिणम्- ऋग्वेद ६.१६.२८, यजुर्वेद- १७.१६ अर्थात् अग्नि अपनी पावक गुणों से विश्व को शुद्ध करती है। इसी कारण इसे पावक अर्थात् पवित्र करने वाला भी कहते हैं।

२. अग्निवृत्राणि जंघनद् । यजुर्वेद- ३३.९ -अग्नि वृत्रों को नष्ट करती है।

३. अग्नी रक्षांसि सेधति- ऋग्वेद ७.१५.१०-- अग्नि रक्षोनाशक है अर्थात् जीवन-रक्षा में जो बाधक तत्त्व वा रोगाणु किटाणु हैं, उन्हें अग्नि मार देती है। कृमि, यातुधान, रक्षस, वृत्र आदि शब्द प्रदूषणकारी किटाणुओं के लिये वेदों में प्रयोग किये गये हैं। यत्र-यत्र इन्हें आयुर्वेद में भी कहा गया है।

सूर्य- प्रदूषणनष्ट करने में सूर्य का भी महान योगदान है। प्रमाण के रूप में कुछ मंत्र उपस्थित है।

१. उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा । दृष्टान् च घ्नन् अदृष्टान् च सर्वान् च प्रमृणन् कृमीन् ॥ ऋग्वेद- १.१९१.८, अथर्वेद- ५.२३.६, ६.५२.१-- उगता हुआ सूर्य रोगकारक दिखने वाले वा न दिखने वाले किटाणुओं को नष्ट करता है। अथर्वेद २.३२.१-६ मंत्रों में इसका विस्तार से वर्णन मिलता है। तैत्तिरीय संहिता २.६.६.३ में भी विस्तार से यह भाव स्पष्ट होता है।

सविता पुनातु-अछिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । यजुर्वेद- ४.४.१०- उदय व अस्त कालीन सूर्य की रश्मियों से रोगाणु नष्ट होते हैं।

इसी प्रकार ऋग्वेद- ९.१९१.१-१६ मंत्रों को तथा अथर्वेद ९.८.१-२२ मंत्रों को देखने से पता चलता है कि सूर्य की रश्मियाँ रोगाणुओं को नष्ट कर वातावरण में स्वास्थ्य

प्रदान करने में अत्यन्त सहायक है। अग्निहोत्र में सूर्य की उपस्थिति में ही वल्कि प्रातः-सायं करने का विधान है जिसका कारण यही है कि स्वस्थ व स्वच्छ वातावरण बनाने में सूर्य की रश्मियाँ अग्निहोत्र को सहायता करती हैं।

सूर्ये विषमा सजामि-- ऋग्वेद-१.१९१.१० से भी यही पता चलता है कि सूर्य से सभी प्रकार के विष व प्रदूषण नष्ट होते हैं। यह तो स्वाभाविक प्राकृतिक प्रक्रिया है पर नाना प्रकार के प्राणियों के वास से पर्यावरण नानाप्रकार से दूषित भी हो रहा है अतः हमें अग्निहोत्र का सहारा भी दैनिक चर्या से लेनी चाहिये ताकि घर-घर स्वस्थ व स्वच्छ रहें।

ध्वनि- वेदों में मधुर ध्वनि को प्रदूषण विनाशक कहा गया है। ब्रह्म की भाँति शब्द-ध्वनि भी व्याप्त हो रही है। वेद वाणी या सुन्दर भावों को लिये सुभाषितानि या मधुर भजन, कीर्तन या जाप ये सब सुमधुर वाणी हैं। प्रवचन जो समाज व राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाये, ये भी सुध्वनि में ही गृहीत है। इन्हें वाग् देवी की संज्ञा प्राप्त है।

-इयं या--- वाग् देवी- , ययैव ससृजे घोरं तथैव शान्तिरस्तु नः। अथर्वेद- १९.९.३. शतपथ ब्राह्मण १.४.४.७ में कहा गया- वाग् वै मनसो हसीयसी- वाणी मन को हर्षित करती है। यहाँ मधुर वाणी से ही तात्पर्य है।

मन्त्रों का सस्वर पाठ, श्लोकोच्चारण, कविता पाठ, सत्संगजन्य भजन कीर्तन सब इसी परम्परा से युक्त हैं। पर माईक आदि यन्त्रों द्वारा अनर्गल बातें त्याज्य हैं। इन यन्त्रों को बहुत आवश्यकता हो तभी बर्ते अर्थात् कम से कम बर्ते तो पर्यावरण को स्वस्थ रखने में सहयोग बन सकता है। अग्निहोत्र आदि उपासना योग में मंत्रोच्चारण इसी कारण अनुकूल व सहायक है। इससे मन को सकून पहुँचती है। मंत्रों क गठन एक वैज्ञानिक तरीके से सप्त छन्दों में इस प्रकार किया

हुआ है कि इनका उत्तम प्रभाव मानस मन पर ही नहीं अपितु अन्य प्राणियों व प्राकृतिक जलवायु पर भी पड़ता है । ऋग्वेद १०.१२५.८ के इस मंत्र को देखें-
अहमेव वात इव प्र वामि-आरभमाणा भुवनानि विश्वा ॥ सम्पूर्ण विश्व में वेद वाणी का प्रभाव है ।

पर्वत-वृक्ष-वनस्पति-औषधि-- वेदों में पर्वतों का बड़ा भारी महत्त्व बताया गया है । खनिज पदार्थों के खान हैं पर्वत । नदी-झरनों के स्रोत हैं पर्वत । पर्वत के वन वनस्पतियों व औषधियों से भरपूर हैं । हिमालय, मलयाचल और ऐसे अनेक देश-विदेश के पर्वत वातावरण के शोधक हैं तथा पृथिवी के संतुलन में सहायक भी ।

१. अन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन । ऋग्वेद- १०.१८.४ शुद्ध वायु देकर पर्वत हमें मृत्यु से बचाता है । अर्थात् भयंकर रोगों से बचाने में मदद करता है । २. अवन्तु मा पर्वातासो ध्रुवासः- ऋग. ६.५२.४-- पर्वत हमारी सदैव रक्षा करें । ३. गिरिं न पुरुभोजसम्- ऋग. ८.८८.२ पर्वत हमारे पुरुभोज हैं अर्थात् स्वस्थ रहने में उत्तम भोग पदार्थ देने वाले हैं । ४. तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवः । ऋग. ५.४१.९-

हमें परिवार व वच्चों के साथ शुद्ध वायु व स्वास्थ्य लाभ हेतु कभी-कभी पर्वत पर जाना चाहिये । पर्वत पर पाये जाने वाले देवदारु, चीड़ आदि तमाम पेड़ ऐसे पाये जाते हैं जो रोगनिवारक हैं । इनसे अग्निहोत्र भी लाभकारी हैं ।

इन सब वैदिक प्रमाणों से विहीत है कि प्राकृतिक वातावरण की सुरक्षा करना तथा इसे स्वच्छ रखना हम सब का नैतिक कर्तव्य है । इनकी रक्षार्थ हमें सदा अनुकूल व उचित प्रयास करना चाहिये ।

CELEBRATION OF DIWALI AT ARYA SAMAJ

On 26th October 2019 we all celebrated the holy festival of Diwali and 136th year of Nirvana Divas of Maharishi Dayanand Saraswati.

The evening started with Havan at 6pm. About 150 people attended this free event.

About 6.40pm Starters were served in Maharishi Dayanand Saraswati Hall. Welcome Indian sweets were served along with other items.

About 7.15pm Lighting of Lamps and inauguration of the event was started by Dr. Narendra Kumar, Acharya Umesh Yadav, Dr. Dheeraj Prakash Joshi, Dr. Rajul and Dr. Bijay Singh and all the members of the Board of Trustees.

Dr. Mrs. Rajul and Dr. Bijay Singh sponsored this event.

Mrs. Vibha Cale introduced the Compere Mrs. Prama Sharma for the evening.

Mrs. Prama Sharma told the audience about the cultural programme organised for the evening.

Miss Ria Sinha and Miss Sia Dhiman presented Bharat Natyam Dance.

This was followed by welcome speech from Dr. Narendra Kumar, Chairman. He wished the audience A Very Happy Diwali and thanked them for coming to Arya Samaj to celebrate Diwali. He also thanked Drs. Rajul and Bijay Singh for sponsoring this costly event.

Dr. Kumar reminded the audience that on 30th October 1883 Diwali evening the founder of Arya Samaj Maharishi Dayanand Saraswati breathed his last in Ajmer city, Rajasthan, India. Arya Samaji people

remember this day as Nirwan Divas all over the world. He also appealed to members to donate money to their Arya Samaj by regular Standing order mandate. He read out the names of members who have started paying donations.

Mrs. Renu Aggarwal sang a song befitting the occasion. A Sitar Dhunn was played by Mrs. Sarika Aggarwal.

A short Video about equal importance of both families of boys and girls when they marry each other. Prepared by A Channel "Khatta Nibooda" with the help of Acharya Umesh Yadav, Mrs. Prama Yadav Sharma and Mr Ashish Sharma.

Mr. John Mall sang a beautiful song about living together with respect for each other.

Mr. Gauri Shankar recited poetry about meaning of Human equality and removal of ignorance by light of knowledge.

Poetry was recited by Mr. Atul Aggarwal and Mrs. Bimla Saund.

Acharya Umesh Yadav spoke about Nirvan Anniversary of Maharishi Dayanand Saraswati and great services done to the Indian community by Maharishi Dayanand Saraswati.

A beautiful Bollywood dance was presented by a young girls group named Miss Pranjal Bhatnagar, Miss Anisha Muir and Miss Subhangi Muir. Audience thoroughly enjoyed their performance.

Raffle Prizes - Prizes for raffle were donated by Mrs. Brij Bala Duggal, Mr. Jogindar Pal Sethi and Mrs. Vibha Cale. Mrs. Brij Bala Duggal and Mrs. Bimla Saund prepared the raffle tickets packets. Mrs. Santosh Bahal, Mrs. Kamlesh, Miss Sunita Bharadwaj, Miss Gulati, Miss Rita Sethi.

All together £190 worth of raffle tickets were sold.

Mrs. B. B. Duggal, Secretary, requested Shri Dheeraj Joshi from Consulate general of India Birmingham to hand over the Certificates

of participation to Miss Ria Sinha, Miss Sia Dhiman, Miss Anisha Muir, Miss Pranjal Bhatnagar, Miss Subhangi Muir and Miss Jigeesha Joshi.

Big thank you to the members of Volunteers of Arya Samaj Events group

Mrs. Brij Bala Duggal, Acharya Umesh Yadav, Mr. Joginder Pal Sethi, Mr. Parimal Somani, Mrs. Bimla Saund, Mr. Vijay Kumar, Mr Rana and Mr. Vinod Gulati worked very hard a day before this event to prepare and decorate the halls for this event.

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is very grateful for their invaluable help and time.

Programme ended about 9.45pm with recitation of Shanti Path.

Dr. Narendra Kumar
Chairman



Children's Corner **Panchatantra Tales**

The Cunning Mediator

“Beware of the rascal who pretends to be holy”

Two partridges (quail like birds) lived in a certain tree in the jungle. While one of them lived on the branches, the other lived inside a hole at the foot of the tree.

They became good friends and they would spend long hours with each other telling each other stories and events of their lives. In this manner, the partridges spent their time in happiness.

One day, one of them went away with some more partridges in search of food.

As was usual, when he did not return back even at sunset, the other partridge started worrying. He thought, “He has not done this ever. Why has the partridge not returned home today? Has he been trapped by a hunter? Or maybe even killed? I cannot live without him. I am certain there is some reason why he has not returned even at nightfall.”

He did not return even the next day, or the day after. For several days, the partridge kept worrying and then gave up hope of his friend’s return. “And so, I spent several days worrying”.

On nightfall, a hare came to the tree and observing an empty hole at the bottom of the tree took shelter inside. Since, the partridge had given up hope, he did not object to the hole being occupied by the hare.

After a few days the partridge returned. He had gone to a place where there was plenty of food to eat. He had grown fat, but remembering his dear friend, he thought of returning.

On his return, when he found that a hare had taken over his house, he objected strongly, “Hare! This hole is my home, and you have taken over during my absence. This is very unfair of you. I demand you to leave immediately”.

The hare disagreed. “This place is mine now. I am not leaving. I found this hole empty, and therefore made it my home”. Thus they began to quarrel.

The partridge understood there was no point in quarrelling with the hare, and said, “Hare! You seem to lack the basic ethics. Let us approach someone holy and knowledgeable. Let someone well-versed in holy books decide who is right, and thus, who shall have the right to occupy the hole.”

The hare agreed, and as suggested they went to look for a holy man to settle their dispute.

Meanwhile, a wild tomcat became aware that they wanted to settle their dispute through a holy man. He quickly posed as a learned animal. He held a blade of kusha grass in his paw and stood on the bank of a river where he will quickly be spotted.

Standing on his hind legs, with his eyes closed, he started chanting.

When the partridge and the hare came across him, the hare said, “He looks holy, and a learned person. Let us go and seek his advice.”

The partridge agreed but said, “Yes let us seek his opinion. But he is a wild cat by birth, and a natural enemy for both of us. We should be careful, and speak only from a distance.”

As decided, they came to the wild tomcat, but stood at a distance, “Holy person! We have a dispute amongst us. Will you please settle our dispute and advice us who is right in accordance to Holy Scriptures. If you decide that one of us has sinned, you may as well eat him!”

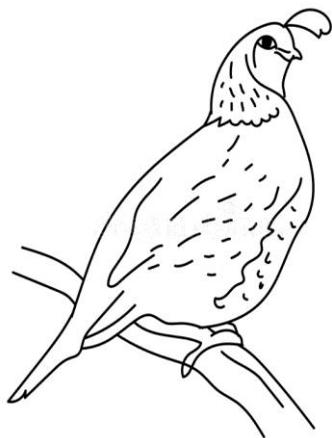
The tomcat replied, “O my friends, I have denounced the violent life as it leads to hell. Non-violence is the very essence of true religion. I shall not harm any of you. However, I will hear both of you and settle your dispute with the knowledge I have gained.”

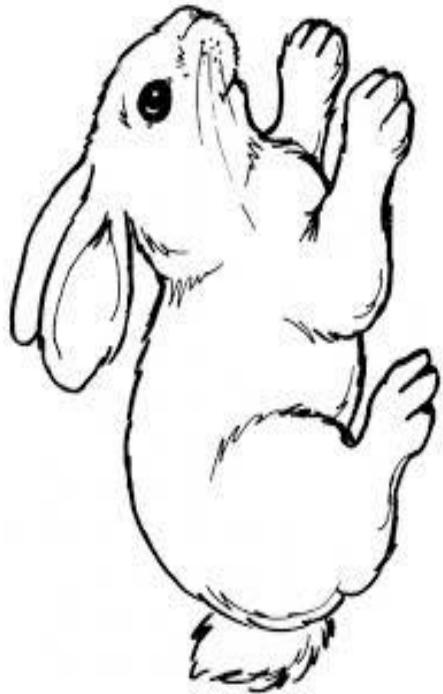
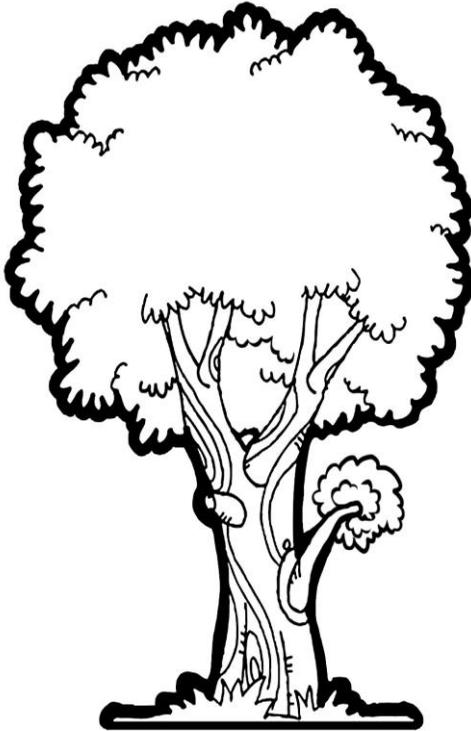
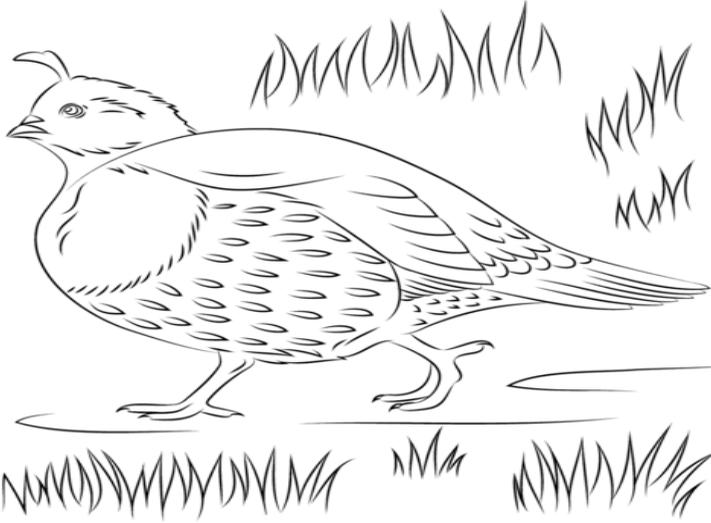
Both the partridge and the hare were impressed. The wild tomcat continued, “But I am old, and cannot hear you from that distance. Fear not! I do not even harm a lice, bug or a mosquito. Come close, and explain the reason of your dispute. I shall make the most just settlement.”

With all these sayings, he won the confidence of both of them. Both the partridge and the hare came near him and sat close to him to explain the reason of their dispute.

This was the very opportunity that the tomcat was looking for. As soon as they sat beside him, he jumped and seized one of them in his teeth and the other with his claws. He killed both of them and made a meal out of them.

Moral of the story: “Beware of a rascal who pretends to be holy”.





Matrimonial Service

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is dedicated to its matrimonial members to provide a service that will help members find a partner for marriage within our community. We feel it is time to make a few changes to help with this process and move forward with the times.

Changes we have made in 2018:

Website:-

- A new data base on the website that will give members an option to add a **photo** if they wish and a space for members to write a **bio** about themselves and what they are looking for in a partner.
- Existing members would have received a letter with information about what we need from you to update your profile. Once you have received this letter please fill it out and send back to us soon as possible, so we can update our **NEW** data base and you can start using the new system.

Matrimonial Service:-

- Members will now be given the **option** to directly contact each other or have the **option** for parents to contact each other.
- All **new** members will be contacted by the office staff for phone conversation during the application process.
- We are also looking in to ways of making our Matrimonial events more successful.
- **Now on facebook -**
<https://www.facebook.com/aryasamajwestmidlands/>

News

Please note

Car Parking for members on Sunday Congregation can safely park their cars on Rookery Road where there is SINGLE YELLOW LINE.

Free Yoga Lesson

**With Dr. Dheeraj Prakash Joshi Yogacharya
Every Thursday - 7pm – 8.15pm
ALL ARE WELCOME!**

Condolence:

- Mrs Neeraj Dandona and family – for the loss of her beloved son Mr Bhaskar Khem Dandona (47) on 19th October 2019. We Pray to Almighty God to grant his soul eternal peace and give strength to his family members & relatives to bear his loss.

Many congratulations to all the mentioned families who have had auspicious havan at their residences On different occasions Or Sunday Vedic Satsangs In Arya Samaj Bhavan.

Donations:

- | | |
|--|------|
| • Dr Bijay Singh & Dr Rajul Singh for Rishi Largar | £600 |
| • Dr Paul Nischal | £30 |
| • Mr Prem Nanda | £21 |
| • Mrs Rani Banga | £21 |
| • Mr Vinod Gulati | £20 |
| • Mr Krishan Chopra | £20 |
| • Mrs Kashiben Raintha | £11 |
| • Mrs Girija Misra | £10 |

Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services:

Members who pay donations by standing order

Name	Amount	Payment
Dr Narendra & Mrs Shama Kumar	£81	Yearly
Anonymous	£100	Yearly
Dr & Mrs Kiran Selvaratnam	£25	Monthly
Dr Narendra & Mrs Shama Kumar	£20	Monthly
Mrs Kanti Bajaj	£20	Monthly
Mrs Nirmal Prinja	£15	Monthly
Dr Saroj Adlakha	£15	Monthly
Dr Umesh Kathuria & Dr Subash Kathuria	£15	Monthly
Dr P.D. Gupta	£11	Monthly
Mrs Sushma Grover	£10	Monthly
Dr Bijay Kumar Singh	£10	Monthly
Mr Medharthee Rathore Arya	£10	Monthly
Mr. Anand Vrat & Mrs. Renuka Chandan	£10	Monthly
Mr R Bali	£10	Monthly
Mr Joginder Pal Sethi	£10	Monthly
Mr Ram Sarup Kohli	£10	Monthly
Mr Swaraj Kumar	£7	Monthly
Mr Amit Khanna	£5	Monthly

Thank you for all your

Donations!

Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on

- Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.
- Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.
- Our premises will be licensed for the civil marriage ceremony.
- Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.
- **PLEASE NOTE - THERE WILL BE NO RADIO XL VED PRACHAR TALK BY ACHARYA DR UMESH YADAV. THIS HAS BEEN PROSPONED UNTIL MARCH 2020.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org

Appeal for donation to
Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands
By Standing Order

Dear Members

Sadar Namaste

I hope you are keeping well and in good spirits.

I wrote to you on 15th January 2018 about purchase and refurbishment of our new head quarter of Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands at Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR.

I am pleased to inform you that about £60,000 has been donated by generous members and friends of our Arya Samaj. About 90% of building works and refurbishments are complete now.

Now I would like to tell you about present financial facts of our Arya Samaj.

Every year we need about £35,000 funds in order to run our Arya Samaj on sound financial grounds.

According to our audited accounts, presented in AGM on 28th July 2019, we paid £22,584 in wages to our Minister of Religion (Acharya ji), a part time Manager and cleaners. £1816 was paid for Insurance cover, about £2100 for providing Rishi Langar on Sundays when there is no sponsor.

We pay annually £3000 on average for "Arya Voice", our Monthly bulletin. On top of all this Gas and Electric bills have to be paid every month. One of our main sources of Income, Matrimonial services, was down to only £8370 for year 2018-19.

Recently I visited Hare Rama Hare Krishna temple in Watford. I

saw three big boards in a hall with about 300 names on these boards. At the top it said "PATRONS OF BHAKTIVEDANTA MANOR". These were the names of Annual donors. Their donations are used in maintenance of the building, big outside grounds and running various activities of the temple.

For any institution to survive and flourish REGULAR DONATION is essential.

I know that we are not as big a charity as Hare Rama Hare Krishna are. But we can run our Arya Samaj temple on the same thinking. We will definitely honour regular donors by putting their names on our big board in Swami Shraddhanand Hall.

All we need help from generous donors like you to donate on a regular basis in future.

Donations can be made by signing a Standing order to your Bank to pay £5, £10, £15 a month in to the

**The Co-operative Bank
Name of account of - Arya Samaj (Vedic Mission) West
Midlands Account number- 65839135,
Sort Code- 08.92.99.**

You can donate cash or by cheque if it suits you.

The money donated by you will help our present and future generations.

So please donate generously. No matter how small every donation will be highly appreciated.

Kind regards.

Yours sincerely

Dr. Narendra Kumar
Chairman

Fee for services provided by Arya Samaj West Midlands

- Ordinary membership fee is £20 for 12 months.
- Renewal for ordinary members of ASWM will get reminder letter for their membership fee of £20 each year.
- Matrimonial Service - £90 for 12 months
- Hire of our hall –
 - Maharshi Dayanand Hall - £500 for 4 hours & £100 hourly.
 - Swami Shraddhanand Hall - £400 for 4 hours & £50 hourly.

Donations to Arya Samaj for Priest Service.

- Marriage Ceremony performed by our priest - £400.
- Havan performed at home by our priest –
 - Birmingham and Surrounding Areas - £51
 - 12 Miles Outside of Birmingham - £101
- Cremation & Shanti Havan performed by our priest –
 - Birmingham and Surrounding Areas - £150
 - 12 Miles Outside of Birmingham - £200
 - Shanti Havan at Arya Samaj after cremation - £100